International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2023; 5(2): 71-77
www.geojournal.net
Received: 06-08-2023
Accepted: 08-09-2023

दुर्गा
शोधार्थी, भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

डॉ. इंदु यादव
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
दुर्गा
शोधार्थी, भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

जयपुर जिले के भूमि उपयोग पर जनसंख्या गत्यात्मकता के प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन

दुर्गा, इंदु यादव

सारांश
किसी क्षेत्र विशेष में विभिन्न कारणों से एक निर्धारित समयावधि में लोगों की संख्या में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या गत्यात्मकता अथवा जनसंख्या गतिशीलता अथवा जनसंख्या गतिकी कहते हैं, जिसके लिए उत्तरदायी कारणों में प्रमुख रूप से जन्म दर, मृत्यु दर, आप्रवास तथा उत्प्रवास को सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान समय में जयपुर जिले के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में तीव्र जनसंख्या गतिशीलता विद्यमान है। जनसंख्या गत्यात्मकता का भूमि उपयोग पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि किसी भी क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता निश्चित होती है जो कि एक सीमित जनसंख्या को पोषण उपलब्ध करवाने में सक्षम होती है। लेकिन जैसे–जैसे प्राकृतिक भू–दृश्य पर लोगों की संख्या में वृद्धि होती जाती है, तो संसाधनों के उपयोग में भी वृद्धि होती है। प्रारम्भ में जब तक जनसंख्या सीमित रहती है तो कृषि योग्य भूमि का विकास होता है, नवीन तकनीक के माध्यम से उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि के अनेक प्रयास किए जाते हैं। कृषि आधुनिकीकरण के तहत कृषि भूमि उपयोग में परिवर्तन, नई तकनीक, मशीनीकरण, रासानिक खाद, नई किस्म के उन्नत बीज, विभिन्न कीटनाशक दवाईयाँ, उन्नत सिंचाई, कीट प्रतिरोधी फसलें, जीवाणु खाद, उचित विपणन आदि का कृषि में उपयोग बढ़ता है जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। किसान जीवन निर्वहन, कृषि से ऊपर उठकर व्यापारिक कृषि की ओर बढ़ने लगते हैं, जिससे उनकी सम्पन्नता भी बढ़ती है। क्षेत्र का स्वरूप परिवर्तित होने लगता है, सर्वप्रथम परिवर्तन भूमि उपयोग में दृष्टिगत होता है। प्राकृतिक भू–दृश्य में धीरे–धीरे सांस्कृतिक परिवेश स्थान लेने लगता है, आवासीय क्षेत्र का विकास होने लगता है, विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में वृद्धि होती है, परिवहन जाल का तीव्र गति से विकास होने लगता है, विभिन्न आर्थिक गतिविधियाँ संचालित होने लगती हैं। लेकिन जैसे–जैसे जनसंख्या वृद्धि अधिक होने लगती है, तो कृषि योग्य भूमि का उपयोग अन्य गैर–कृषिगत कार्यों में किया जाने लगता है, जैसे आवास, वाणिज्य, व्यवसाय, मनोरंजन एवं अन्य जनसुविधाओं के विकास में भूमि का उपयोग किया जाने लगता है एवं अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र का स्थान द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र लेने लगता है।

कूटशब्द : जनसंख्या गत्यात्मकता, भूमि उपयोग, गैर–कृषिगत कार्य, आर्थिक गतिविधियाँ

प्रस्तावना
भूमि उपयोग में परिवर्तन के कारकों में जनसंख्या गत्यात्मकता एक महत्वपूर्ण आधार रहा है जिसकी प्राथमिक अवस्था में भू–भाग वनस्पति आवरण से आच्छादित या वनस्पति विहीन रहता है, धीरे–धीरे इस भू–भाग पर मानवीय गतिविधियाँ प्रारम्भ होने लगती हैं। मानव अपनी आवश्यकता के अनुरूप भूमि का उपयोग करता है। मानव ही भूमि को कृषि के योग्य बनाता है, कम उपजाऊ भाग को अधिक उपजाऊ बनाता है तथा एक फसली क्षेत्र को बहु फसली क्षेत्र में परिवर्तित करता है। जब भू–भाग का प्राकृतिक स्वरूप लुप्त हो जाता है तथा मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है। किसी भी स्थान की भूमि उपयोग गहनता कुछ कारकों जैसे वर्षा, मृदा, सिंचाई, काश्तकारों की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। आधुनिकीकरण प्रक्रिया से कृषि में भी समयानुसार परिवर्तन आने लगे तथा आधुनिक तथा परम्परागत पद्धतियों से सामंजस्य स्थापित हुआ। सरकारों ने किसानों को वांछित सुविधाएं एवं सहायता देना प्रारम्भ किया जिससे कृषि विकास में सहायता प्राप्त हो सके, जिनमें ऋण सुविधा, यातायात सुविधा, सिंचाई सुविधाओं का विकास, कृषि यंत्र एवं कृषि विस्तार कार्यक्रम क्रियान्वित करना, आधुनिक मशीनें उपलब्ध करवाना आदि प्रमुख हैं। भूमि उपयोग में परिवर्तन के बतौर आवास, वाणिज्य, व्यवसाय, मनोरंजन एवं अन्य जनसुविधाओं का विकास होने लगता है, प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों के साथ–साथ द्वितीयक एवं तृतीयक आर्थिक गतिविधियां बढ़ने लगती हैं, क्षेत्र की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है।

अध्ययन क्षेत्र

जयपुर जिला राजस्थान में सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं ऐतिहासिक रूप में अपना प्रमुख स्थान रखता है। यह राजस्थान का सबसे अधिक जनसंख्या वाला जिला है। जयपुर जिला, प्रदेश के पूर्वी भाग में $26^0$23′ से $27^0$51′ उत्तरी अक्षांशों एवं $74^0$55′ से $76^0$50′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में सीकर व हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला, दक्षिण में टोंक, पूर्व में अलवर, दौसा तथा पश्चिम में नागौर व अजमेर जिले स्थित हैं। जयपुर जिला समुद्री स्तर से 431 मीटर /1417 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। इस जिले में अरावली पर्वत श्रेणी उत्तर–पश्चिम क्षेत्र से गुजरती है, यहां की जलवायु शुष्क एवं स्वास्थ्यवर्धक है। अरावली पर्वत श्रेणी मानसून रेखा के समान्तर होने के कारण यहां वर्षा कम होती है। जयपुर में वर्षा का औसत 60.35 सेन्टीमीटर है, शीतकाल में यहाँ (मावठ) वर्षा होती है। जिले में जनवरी माह का तापमान 8^0C से 10^0C तक होता है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2011 में 955.66 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र घेरे हुए था। राज्य सरकार ने हरित राजस्थान के नाम से सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, जिसके तहत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में वृक्षारोपण किया जा रहा है। राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता संरक्षण सोसायटी द्वारा 'जायका' के सहयोग से वृक्षारोपण वन्यजीव संरक्षण एवं जैव विविधता संरक्षण के कार्यों का साझा वन प्रबंधन किया जा रहा है।

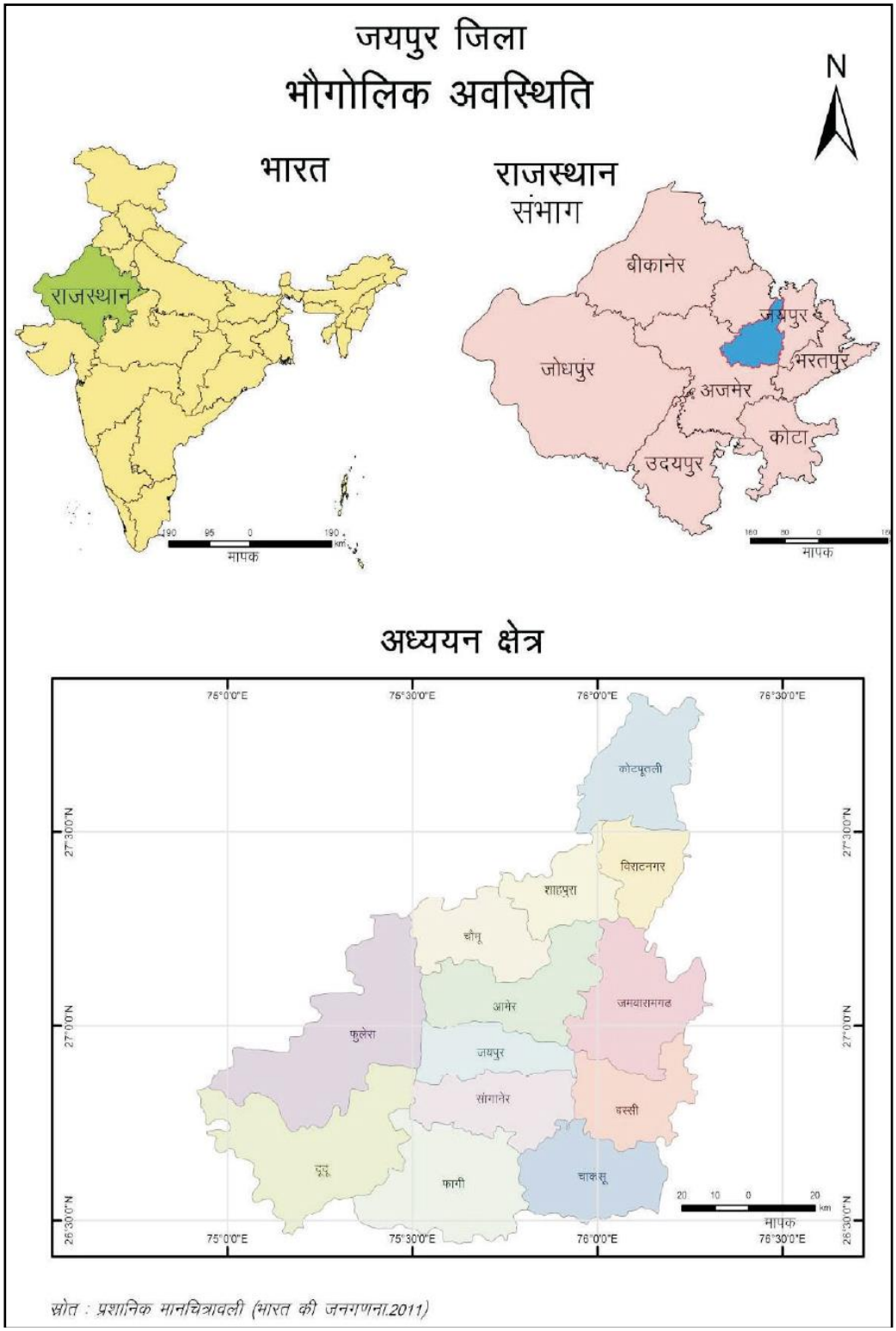

मानचित्र 1: जयपुर जिले की अवस्थिति

उद्देश्य

1. जयपुर जिले में भूमि उपयोग का अध्ययन करना।
2. जयपुर जिले में जनसंख्या गत्यात्मकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. विगत दशकों में जयपुर जिले में जनसंख्या गत्यात्मकता के कारण भूमि उपयोग परिवर्तित हुआ है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों एवं पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ व्यक्तिगत एवं सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी हैं। उक्त शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

1. **प्राथमिक स्रोत :** इस सम्बन्ध में प्रश्नावली, परिचर्चा एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से आंकड़े एकत्रित कर उपयोग में लिए गये हैं।
2. **द्वितीय स्रोत :** इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, कार्यालयों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या गत्यात्मकता

किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित समयावधि में जन्म दर, मृत्यु दर, आप्रवास एवं उत्प्रवास के कारण निवास करने वाले लोगों की संख्या में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या गत्यात्मकता कहा जाता है। जयपुर जिले में जनसंख्या गत्यात्मकता की तीव्र प्रवृति देखी गयी है, यहाँ के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारणों में क्षेत्र का ऐतिहासिक महत्व, सांस्कृतिक महत्व, धरातलीय स्वरूप, सामाजिक संगठन, व्यावसायिक संरचना, जनसुविधाएं, रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी आदि हैं। जयपुर शहर, प्रदेश का राजधानी नगर होने के कारण प्रशासनिक गतिविधियों का केन्द्र है, साथ ही यहाँ विभिन्न आर्थिक गतिविधियां संचालित होती हैं। इसके अतिरिक्त जयपुर जिले ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश के प्रमुख शिक्षा के केन्द्र के रूप में पहचान बनाई है, जिसमें स्कूल एवं कॉलेज शिक्षा के अतिरिक्त कोचिंग शिक्षण संस्थानों की अधिकता है, जिनमें अध्ययन के लिए देश एवं प्रदेश के विद्यार्थी प्रति वर्ष आते हैं। इस प्रकार इन सभी कारणों के परिणामतः जयपुर जिले में जनसंख्या का स्वरूप एवं प्रवृति निर्धारित होती हैं, जो कि जनसंख्या गतिकी को स्पष्ट करती हैं। जनसंख्या गतिशीलता के अन्तर्गत जनसंख्या वितरण एवं वृद्धि के साथ ही जनसंख्या की संरचना एवं घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, व्यावसायिक संरचना आदि के परिवर्तन का भी विशेष महत्व रहता है। जयपुर जिले में वर्ष 1931 से 2021 (अनुमानित) जनसंख्या में दशकीय परिवर्तन निम्न प्रकार रहा है।

तालिका संख्या 1 : जयपुर जिले की जनसंख्या में दशकीय वृद्धि (1931 से अनुमानित 2021)

क्र. सं.	वर्ष	जनसंख्या	दस वर्षीय अन्तर	प्रतिशत वृद्धि (+)
1	1931	813631	–	–
2	1941	926153	(+) 112522	(+) 13.83
3	1951	1186745	(+) 260592	(+) 28.14
4	1961	1508009	(+) 321264	(+) 27.07
5	1971	1993463	(+) 485454	(+) 32.19
6	1981	2802414	(+) 808951	(+) 40.58
7	1991	3887895	(+) 1085481	(+) 38.73
8	2001	5251071	(+) 1363176	(+) 35.06
9	2011	6626178	(+) 1375107	(+) 26.19
10	2021 (अनुमानित)	8100000	(+) 1373822	(+) 20.73

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 2011 राजस्थान।

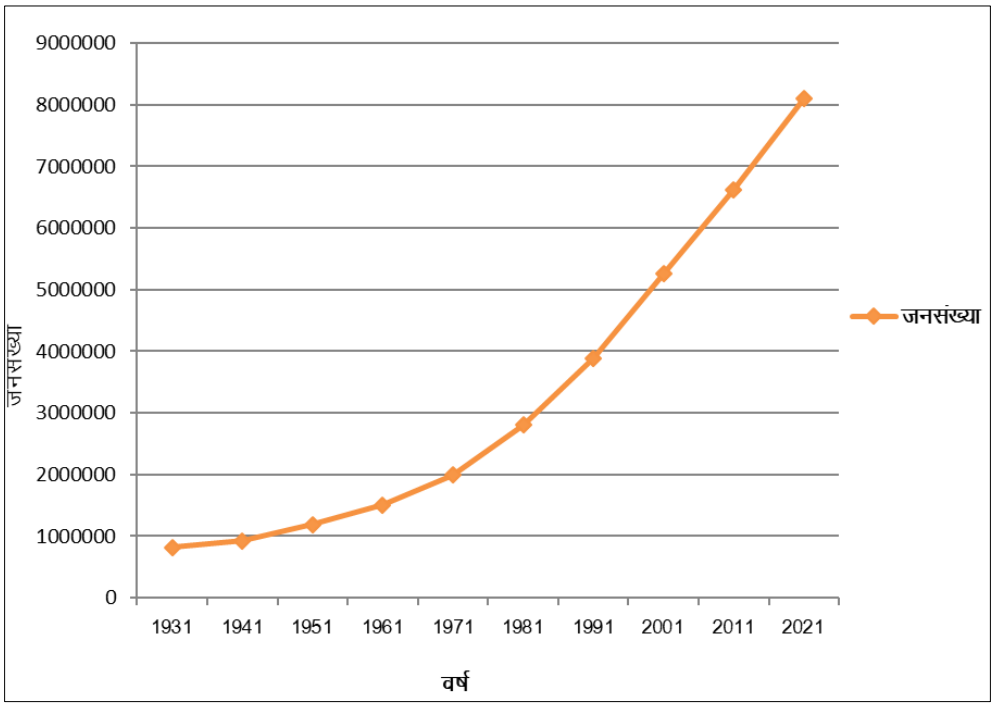

आरेख 1: जयपुर जिले में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि (वर्ष 1931–2021)

वर्ष 1931 की जनगणना के आँकड़ों से स्पष्ट है कि इस वर्ष जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 813631 रही थी। वर्ष 1941 की जनगणना से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 926153 रही थी। इस दशक में 112522 लोगों की वृद्धि हुई एवं प्रतिशत वृद्धि 13.83 हुई थी। वर्ष 1951 की जनगणना के अनुसार जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 1186745 रही थी। इस दशक में 260592 लोगों की वृद्धि हुई एवं प्रतिशत वृद्धि 28.14 हुई थी। 1961 में जिले की कुल जनसंख्या 1508009 रही, इस दशक 321264 लोगों की वृद्धि हुई एवं प्रतिशत वृद्धि 27.07 हुई। 1971 में जिले की कुल जनसंख्या 1993463 रही, उक्त दशक में 485454 लोगों की वृद्धि हुई एवं प्रतिशत वृद्धि 32.19 हुई। वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 2802414 रही, उक्त दशक में 808951 लोगों की वृद्धि हुई एवं प्रतिशत वृद्धि 40.58 हुई। इस दशक में जयपुर जिले की जनसंख्या में सर्वाधिक प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई थी। वर्ष 1991 की जनगणना के आधार पर जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 3887895 रही, विगत दशक की जनसंख्या से यह 1085481 अधिक थी एवं प्रतिशत वृद्धि 38.73 हुई थी।

2001 की जनगणना के आधार पर जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 5251071 थी, जो कि वर्ष 1991 की जनसंख्या से 1363176 अधिक रही तथा प्रतिशत वृद्धि 35.06 हुई थी। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 6626178 थी, जो कि वर्ष 2001 की जनसंख्या से 1375107 अधिक रही तथा इसमें प्रतिशत वृद्धि 26.19 हुई थी। वर्ष 2021 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 8100000 है, जो कि वर्ष 2011 की जनसंख्या से 1373822 अधिक है एवं इसमें प्रतिशत वृद्धि 20.73 हुई है। स्वतंत्रता के बाद जयपुर जिले की जनसंख्या में तीव्र विकास हुआ, इसका कारण जयपुर जिले की अवस्थिति एवं साथ ही पड़ोसी प्रमुख नगरों से राजमार्ग एवं रेलवे लाइन से जुड़ा हुआ होना है। जयपुर जिले के नगरीय क्षेत्रों में उच्च स्तर की नागरिक सुविधाऐं भी उपलब्ध हैं। अतः यह निवेशकों के आकर्षण का केन्द्र बना, बड़े उद्योग एवं व्यावसायिक गतिविधियाँ स्थापित हुई। फलस्वरूप यहाँ पर बड़ी संख्या में प्रवासियों का आप्रवास हुआ है। इस प्रकार जिले की तीव्र जनसंख्या वृद्धि यहाँ उच्च जनसंख्या गत्यात्मकता को प्रकट करती है।

भूमि उपयोग पर प्रभाव

भूमि उपयोग के अन्तर्गत वन (जंगलात), कृषि अयोग्य भूमि, जोत रहित भूमि (पडत भूमि के अतिरिक्त), पड़त भूमि, वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल (दुपज घटाकर), समस्त बोया गया क्षेत्रफल, एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल भूमि को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार भूमि उपयोग का एक बड़ा भाग कृषि भूमि में आता है। जयपुर जिले में भूमि उपयोग पर जनसंख्या गत्यात्मकता के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए वर्ष 2000–01, वर्ष 2006–07, वर्ष 2013–14 एवं वर्ष 2019–20 के भूमि उपयोग के आंकड़ों का अध्ययन किया गया है। जयपुर एक कृषि प्रधान जिला है, जहाँ के ग्रामीण क्षेत्र की लगभग 65 प्रतिशत से ज्यादा लोग कृषि कार्य के अन्तर्गत संलग्न हैं, जिले में बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए कृषिगत एवं गैर–कृषिगत क्रियाकलापों में वृद्धि हो रही है।

तालिका संख्या 2 : जयपुर जिले में भूमि उपयोग (हैक्टेयर में)

क्र. सं.	भूमि उपयोग	2000–01	2006–07	2013–14	2019–20
1	जंगलात	81511	81418	82606	82814
2	कृषि अयोग्य भूमि	128470	133119	123808	140741
3	जोत रहित भूमि (पडत भूमि के अतिरिक्त)	111256	114607	114536	110630
4	पडत भूमि	200125	154522	93266	117467
5	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल (दुपज घटाकर)	584154	621853	661842	637433
6	समस्त बोया गया क्षेत्रफल	814956	861411	1013001	980987
7	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	230802	239558	351159	343554

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर वर्ष 2002, 2008, 2015 व 2021

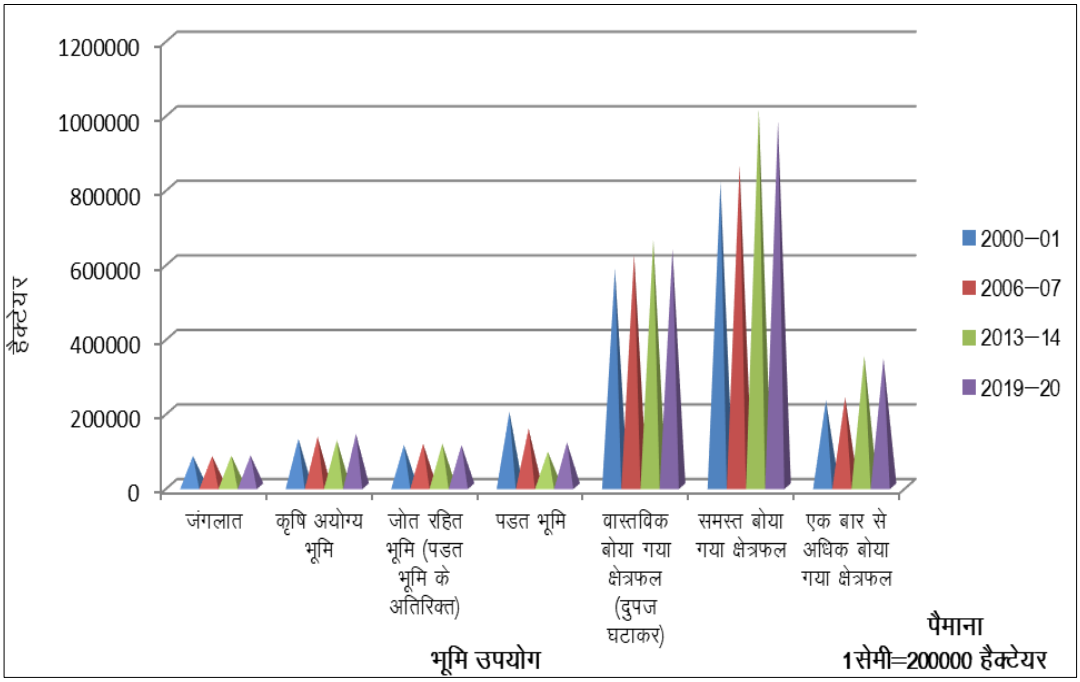

आरेख 2: जयपुर जिले में भूमि उपयोग (हैक्टेयर में) वर्ष 2000–01 से 2019–20

जयपुर जिले में वर्ष 2000–01 में जंगलात क्षेत्र 81511 हैक्टेयर, जोत रहित भूमि 111256 हैक्टेयर, कृषि अयोग्य भूमि 128470 हैक्टेयर, परती भूमि 200125 हैक्टेयर, वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल 584154 हैक्टेयर, समस्त बोया गया क्षेत्रफल 814956 हैक्टेयर एवं एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल 230802 हैक्टेयर थे। वर्ष 2006–07 में क्रमशः जंगलात 811418 हैक्टेयर, कृषि अयोग्य भूमि 133119 हैक्टेयर, जोत रहित भूमि 114607 हैक्टेयर, परती भूमि 154522 हैक्टेयर, वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल 621853 हैक्टेयर, समस्त बोया गया क्षेत्रफल 811411 हैक्टेयर एवं एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल 239558 हैक्टेयर हो गये। इस प्रकार उक्त समयावधि में भूमि उपयोग में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है।

तालिका संख्या 3 : जयपुर जिले में भूमि उपयोग (प्रतिशत में)

क्र. सं.	भूमि उपयोग	2000–01	2006–07	2013–14	2019–20
1	जंगलात	7-37%	7-36%	7-47%	9-05%
2	कृषि अयोग्य भूमि	11-62%	12-04%	11-19%	12-63%
3	जोत रहित भूमि (पडत भूमि के अतिरिक्त)	10-07%	10-37%	10-34%	9-93%
4	पडत भूमि	18-10%	13-98%	9-51%	10-54%
5	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल (दुपज घटाकर)	52-84%	56-25%	59-86%	57-85%
6	समस्त बोया गया क्षेत्रफल	73-72%	77-92%	91-63%	88-69%
7	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	39-51%	38-52%	31-17%	30-84%

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर वर्ष 2002, 2008, 2015 व 2021

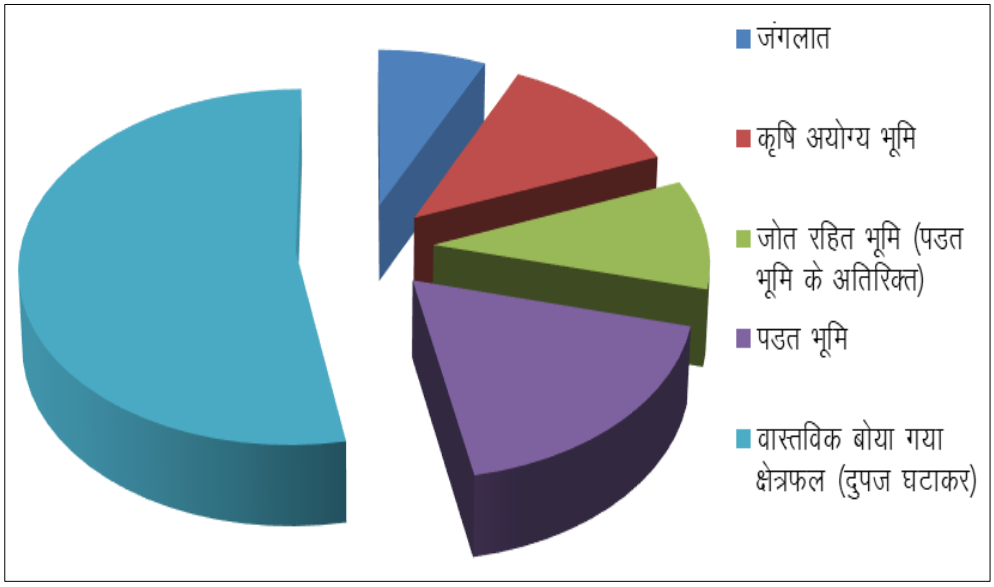

आरेख 3: जयपुर जिले में भूमि उपयोग (वर्ष 2000–01, प्रतिशत में)

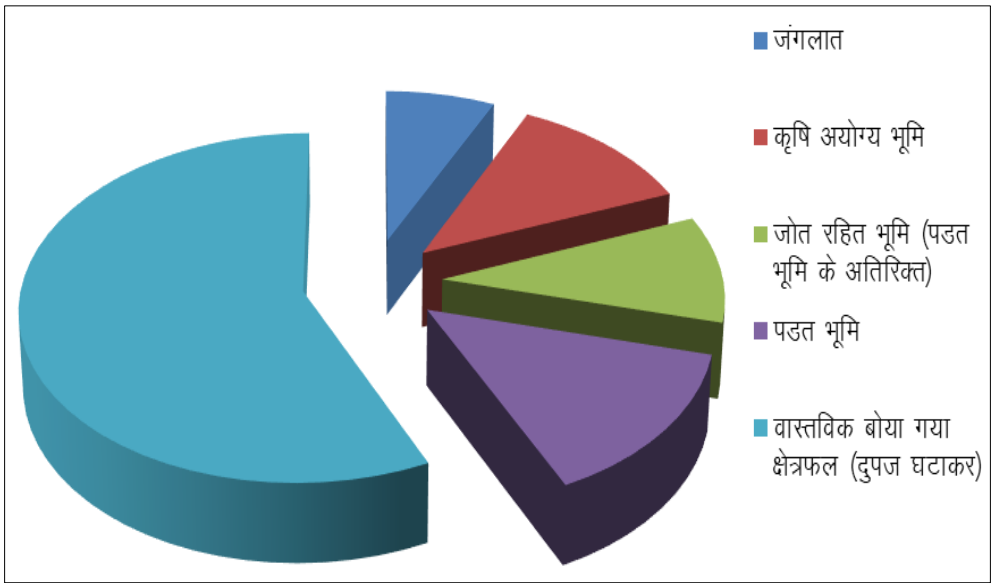

आरेख 4: जयपुर जिले का भूमि उपयोग वर्ष 2006–07 (प्रतिशत में)

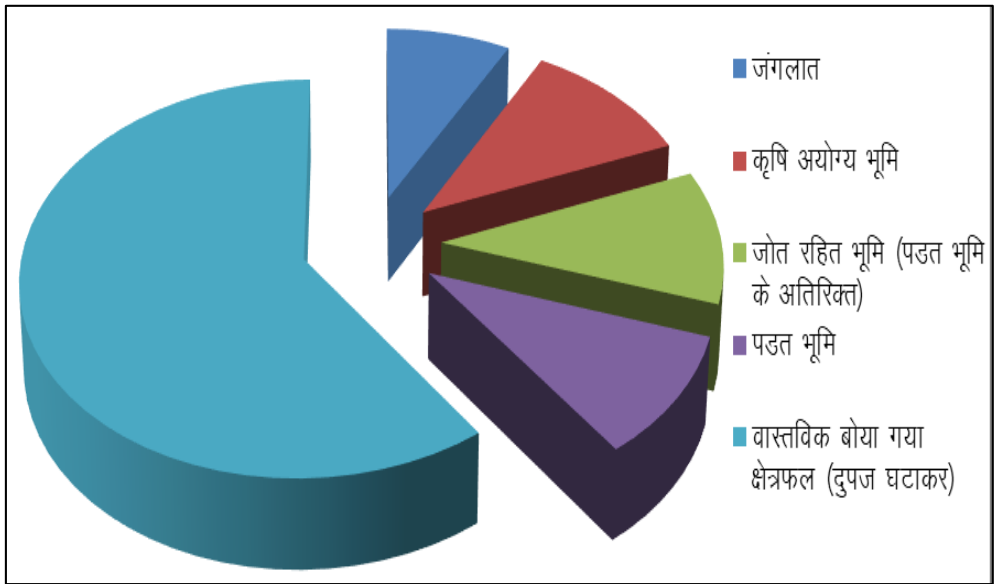

आरेख 5: जयपुर जिले का भूमि उपयोग वर्ष 2013–14 (प्रतिशत में)

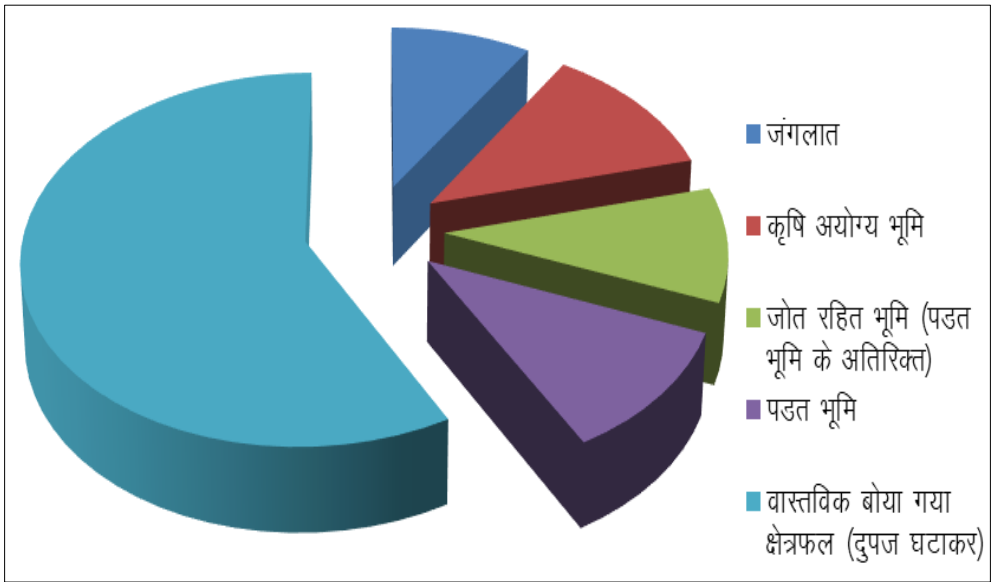

आरेख 6: जयपुर जिले का भूमि उपयोग वर्ष 2019–20 (प्रतिशत में)

जयपुर जिले में वर्ष 2013–14 में जंगलात 82606 हैक्टेयर, कृषि अयोग्य भूमि 123808 हैक्टेयर, जोत रहित भूमि 114536 हैक्टेयर, परती भूमि 93266 हैक्टेयर, वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल 661842 हैक्टेयर, समस्त बोया गया क्षेत्रफल 1013001 हैक्टेयर एवं एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल 351159 हैक्टेयर हो गये, जो कि वर्ष 2019–20 तक क्रमशः जंगलात 82814 हैक्टेयर, कृषि अयोग्य भूमि 140741 हैक्टेयर, जोत रहित भूमि 110630 हैक्टेयर, परती भूमि 117467 हैक्टेयर, वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल 637433 हैक्टेयर, समस्त बोया गया क्षेत्रफल 980987 हैक्टेयर एवं एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल 343554 हैक्टेयर हो गये हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि विगत वर्षों में लगातार जनसंख्या गतिशीलता के कारण भूमि उपयोग में परिवर्तन हुआ है। जिले में जनसंख्या वृद्धि दर के अनुरूप विकास कार्य किए जा रहे हैं, विभिन्न योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है, अतः भविष्य में भी भूमि उपयोग में परिवर्तन आना तय है।

इस प्रकार जयपुर जिले में भूमि उपयोग वर्ष 2000–01 से वर्ष 2019–20 तक लगातार परिवर्तित होता रहा है। जिले में तीव्र जनसंख्या वृद्धि हो रही है, ग्रामीण क्षेत्रों एवं नगरीय क्षेत्रों में लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न जन–कल्याणकारी योजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। कृषि योग्य भूमि का विकास किया जा रहा है, कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी हो रही है। विभिन्न गैर–कृषिगत कार्य जैसे आवासीय क्षेत्र, वाणिज्यिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, परिवहन, मनोरंजन एवं अन्य जनसुविधाओं संबंधी कार्यों के विकास हेतु भूमि उपयोग में बढ़ोतरी हो रही है, अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र का स्थान द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र लेने लगे हैं। परिणामस्वरूप भूमि उपयोग में परिवर्तन क्षेत्र ने आर्थिक विकास को प्रशस्त करता है, जिससे जिले का भूमि उपयोग सकारात्मक रूप से बदल रहा है।

निष्कर्ष

जयपुर जिले में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या अर्थात् उच्च जनसंख्या गत्यात्मकता के कारण भूमि उपयोग लगातार प्रभावित हो रहा है। जिले में फसल उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी के लिए उन्नत बीजों का प्रयोग, उर्वरकों का प्रयोग, कीटनाशक एवं पौध संरक्षण औषधियां, संस्थागत सुविधाएं, कृषि विस्तार व अनुसंधान सुविधाएं, पशु एवं फसल संरक्षण, कृषि साख सुविधाएं, यातायात व संचार सुविधाएं, विद्युत सुविधा, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सामूहिक विचार–विमर्श आदि को सम्मिलित किया जाता है। विभिन्न गैर–कृषिगत गतिविधियां जैसे आवासीय, औद्योगिक, व्यापारिक, ड़ेयरी, शिक्षण एवं स्वास्थ्य केन्द्र, खेल व मनोरंजन

स्थल आदि स्थापित होती जा रही हैं। जिले में तीव्र गति से बढ़ती हुई आबादी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आर्थिक गतिविधियां भी लगातार बढ़ रही हैं। जिले का जयपुर शहर जो कि प्रदेश का राजधानी नगर एवं महानगर है, उसे स्मार्ट सिटी की लिस्ट में शामिल कर विकास कार्य किए जा रहे हैं। जयपुर महानगर प्रदेश की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र है। इस प्रकार जयपुर जिले में जनसंख्या गत्यात्मकता में वृद्धि के साथ–साथ भूमि उपयोग को अधिक मानवीय लाभ के अनुरूप परिवर्तित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त जिले में जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी भी प्रभावित हो रहे हैं।

संदर्भ

1. भल्ला एल. आर. (2022), राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या 76–87।
2. शर्मा, आर. एन. (2022). वाटर कन्जर्वेशन– स्ट्रेटेजीज एण्ड सोलुशन, रावत प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या 63–66।
3. सक्सेना, हरिमोहन (2021), ''राजस्थान का भूगोल'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान सरकार पृष्ठ संख्या 51–59।
4. तिवारी आर. सी. एवं सिंह बी. एन. (2021), कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहबाद, पृष्ठ संख्या 41–48।
5. गौतम, अल्का (2020), कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 76–85।
6. जिला साख्यिकी रूपरेखा, सीकर जिला– 2002, 2012, 2022
7. शुक्ला राजेश एवं शुक्ला रश्मि (2019), कृषि भूगोल, अर्जुन प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या 71–77।